भारतीय ज्ञान धरोहर

विमर्श और परंपरा

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान धरोहर

विमर्श और परम्परा

सम्पादक

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,

अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :
छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001
मो. 9660111549

संस्करण :
प्रथम 2023

ISBN : **978 - 81 - 89435 - 69 - 1**

मूल्य - 400/-

रचना - भारतीय ज्ञान धरोहर : विमर्श और परम्परा

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

29

तुलसीदास की विचारभूमि

रामस्वरूप गढ़वाल
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

गोस्वामी तुलसीदास भारतीय भक्ति आंदोलन के सबसे महान संत और कवि थे। उनका जन्म 1532 ईस्वी में उत्तर प्रदेश के राजापुर गाँव में हुआ। उनका जीवन सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दृष्टि से जटिल परिस्थितियों में व्यतीत हुआ। उस युग में समाज में अज्ञानता, सामाजिक असमानता, जातिवाद और धार्मिक कट्टरता प्रचलित थी। ऐसे परिवेश में तुलसीदास ने भक्ति और धर्म के माध्यम से समाज सुधार और नैतिक चेतना फैलाने का कार्य किया। तुलसीदास ने केवल कविता और साहित्यिक शैली से संतोष नहीं किया, बल्कि उन्होंने आम जनमानस तक धर्म, भक्ति और नैतिकता का संदेश पहुँचाने की कोशिश की। उनके दृष्टिकोण में भक्ति, ज्ञान, समाज सेवा और नैतिकता का पूर्ण समन्वय मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य था। तुलसीदास ने हिंदी भाषा को एक शक्तिशाली साहित्यिक माध्यम बनाया। उनकी प्रमुख रचनाएँ रामचरितमानस, हनुमान चालीसा, कवितावली, दोहावली और विनयपत्रिका हैं। इन रचनाओं में केवल धार्मिक संदेश ही नहीं, बल्कि समाज सुधार, न्याय, समानता और मानव मूल्यों की गहरी समझ भी निहित है। तुलसीदास की रचनाओं ने न केवल साहित्यिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया। उनके ग्रंथों का उद्देश्य सामान्य जनता को जीवन के उच्चतम आदर्शों की ओर प्रेरित करना था।

उदाहरण –

'मानस कष्ट मिटै, तुझही भजि मन।'

अर्थात् ईश्वर की भक्ति से व्यक्ति के मानसिक और आध्यात्मिक कष्ट दूर होते हैं।

तुलसीदास की भक्ति विचारधारा

तुलसीदास की भक्ति विचारधारा का केन्द्र रामभक्ति था। उनके अनुसार सच्ची भक्ति केवल पूजा–पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि हृदय से भगवान के प्रति प्रेम

और समर्पण का भाव होना आवश्यक है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम के जीवन, उनके आदर्श और उनके कर्तव्य पालन का विस्तृत चित्रण किया।

'सतुर लखन राम सदा बिसार।'

अर्थात् सच्चा भक्त अपने जीवन में राम और उनके आदर्शों को सदैव स्मरण करता है और उसी में संतोष पाता है।

उनके दृष्टिकोण में भक्ति केवल आध्यात्मिक अनुभव नहीं, बल्कि व्यक्ति के सामाजिक और नैतिक जीवन को भी सुधारने का साधन है। तुलसीदास का मानना था कि भक्ति के माध्यम से व्यक्ति अपने अंदर सत्य, धैर्य, करुणा और न्याय की भावना विकसित करता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि भक्ति का मूल्य तभी है जब यह हृदय से उत्पन्न हो और जीवन में उसके कृत्यों में प्रतिबिंबित हो। तुलसीदास ने यह भी स्पष्ट किया कि भक्ति मार्ग में व्यक्ति को न केवल व्यक्तिगत मुक्ति की ओर ध्यान देना चाहिए, बल्कि समाज में न्याय, सेवा और परोपकार की दिशा में भी योगदान देना चाहिए। उनकी यह दृष्टि यह बताती है कि भक्ति और सामाजिक जिम्मेदारी आपस में संबद्ध हैं और समाज के नैतिक और आध्यात्मिक विकास में भक्ति का गहरा प्रभाव होता है।

धर्म और नैतिक शिक्षा

तुलसीदास का जीवन और साहित्य धर्म और नैतिकता के सिद्धांतों पर आधारित था। उनके अनुसार जीवन में सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा और परोपकार का पालन अत्यंत आवश्यक है। रामचरितमानस में राजा राम का चरित्र आदर्श और नैतिक मूल्यों का प्रतीक है।

'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियं।'

इसका अर्थ है कि सत्य बोलो, प्रिय बोलो, लेकिन ऐसा न बोलो जो सत्य और प्रिय दोनों के विरोध में हो। यह जीवन में नैतिक शिक्षा और व्यवहारिक धर्म का आदर्श प्रस्तुत करता है।

तुलसीदास ने धर्म को केवल धार्मिक कर्मों तक सीमित न रखते हुए, जीवन के व्यवहारिक पहलुओं से जोड़ा। उनके अनुसार धर्म का पालन जीवन में संतुलन, शांति और स्थिरता सुनिश्चित करता है। तुलसीदास ने आम जनता तक इसे सरल भाषा में पहुँचाया ताकि हर व्यक्ति धर्म और नैतिकता का पालन कर सके। उन्होंने स्पष्ट किया कि धर्म केवल संस्कार और नियमों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे जीवन के हर पहलू में लागू करना आवश्यक है। धर्म का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं, बल्कि समाज और मानवता के कल्याण के लिए होना चाहिए। तुलसीदास

की यह दृष्टि आज भी नैतिक शिक्षा और सामाजिक व्यवहार के लिए प्रासंगिक है।

सामाजिक चेतना और सुधार

तुलसीदास सामाजिक दृष्टि से समानता, न्याय और सेवा के पक्षधर थे। उन्होंने समाज में फैली जातिवाद, अन्याय और अज्ञानता के खिलाफ चेतना फैलाने का प्रयास किया। उनके ग्रंथों में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि सभी मानव धर्म और भक्ति में समान हैं। रामचरितमानस और हनुमान चालीसा के माध्यम से तुलसीदास ने सामाजिक कर्तव्य, सेवा और न्याय के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने आम जनता को यह संदेश दिया कि समाज का उत्थान तब संभव है जब लोग भक्ति, सेवा और मानवता के मार्ग पर चलें।

'राम रसायन मनुष्य हितकारी।'

इसका अर्थ है कि राम के उपदेश और भक्ति मनुष्य के हित और समाज सुधार में सहायक हैं।

तुलसीदास ने साहित्य का उपयोग कर सामाजिक चेतना और नैतिक शिक्षा का प्रचार किया। उनकी रचनाएँ न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि समाज में नैतिकता और समानता के संदेश का वाहक भी हैं। तुलसीदास का दृष्टिकोण यह दिखाता है कि भक्ति केवल व्यक्तिगत मोक्ष का साधन नहीं, बल्कि समाज में नैतिक और आध्यात्मिक चेतना को फैलाने का माध्यम भी है।

रामराज्य और आदर्श शासन

तुलसीदास ने रामराज्य को आदर्श शासन के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार आदर्श शासन का उद्देश्य केवल सत्ता और शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि न्याय, धर्म और प्रजा के कल्याण की प्राप्ति होना चाहिए।

'रामराज्य सुखदायक, धर्म से विभूषित।'

यह बताता है कि आदर्श शासन केवल सुख और समृद्धि का माध्यम नहीं, बल्कि धर्म और न्याय से संचालित होना चाहिए।

रामराज्य का मॉडल सत्य, न्याय, परोपकार और निस्वार्थ सेवा के सिद्धांतों पर आधारित था। तुलसीदास ने राम के जीवन और शासन के उदाहरण से यह स्पष्ट किया कि आदर्श राजा वही है जो अपने प्रजाजनों के कल्याण, संतुलित निर्णय और धर्म के पालन के लिए समर्पित हो। रामराज्य का आदर्श आज भी नेतृत्व और प्रशासन के सिद्धांतों में मार्गदर्शक है। तुलसीदास का यह दृष्टिकोण बताता है कि शासन का उद्देश्य केवल सत्ता नहीं, बल्कि समाज और मानवता के उत्थान के लिए होना चाहिए।

साधु जीवन और संयम

तुलसीदास के विचार में साधु जीवन और संयम का विशेष महत्व था। उन्होंने सांसारिक मोह और लोभ से दूर रहने का संदेश दिया। उनके अनुसार संयमित जीवन मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति का आधार है। तुलसीदास ने व्रत, उपवास और साधना के माध्यम से मानसिक अनुशासन और आत्मशुद्धि की महत्ता को रेखांकित किया।

'साधु संगति सुखदायी, मोहि भया मोही साथी।'

यह दोहा बताता है कि साधु और संयमित जीवन व्यक्ति के जीवन में सुख और स्थायित्व लाता है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि सांसारिक मोह से मुक्ति और संयमित जीवन से ही व्यक्ति परम आनंद और आत्मिक शांति प्राप्त कर सकता है। साधु जीवन केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि समाज में शांति और संतुलन बनाए रखने का भी मार्ग है।

शिक्षा और ज्ञान की भूमिका

तुलसीदास ने शिक्षा और ज्ञान को जीवन का अनिवार्य अंग माना। उनके अनुसार ज्ञान केवल पुस्तकीय नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे व्यवहार में लागू करना आवश्यक है। ज्ञान और शिक्षा व्यक्ति को नैतिक और आध्यात्मिक चेतना प्रदान करती हैं और समाज सुधार का माध्यम भी बनती हैं।

'विद्या विनयेन शोभते, विद्या धनमय भवति।'

इसका अर्थ है कि ज्ञान विनय के साथ प्रतिष्ठा प्राप्त करता है और समाज में वास्तविक मूल्य प्राप्त करता है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस और अन्य रचनाओं के माध्यम से यह शिक्षा दी कि सही ज्ञान ही जीवन में सफलता, सुख और मोक्ष प्रदान करता है। उनके अनुसार ज्ञान और शिक्षा समाज के नैतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए अपरिहार्य हैं।

साहित्य के माध्यम से समाज सुधार

तुलसीदास ने साहित्य का उपयोग समाज सुधार और भक्ति जागरूकता के लिए किया। उनकी रचनाएँ आम जनता तक संदेश पहुँचाने का सबसे प्रभावी माध्यम थीं। हनुमान चालीसा ने रामभक्ति और साहस का संदेश दिया, जबकि रामचरितमानस ने नैतिक शिक्षा, आदर्श शासन और सामाजिक चेतना का प्रचार किया।

'सुनि राम कथा मन मोहि भाय।'

अर्थात् राम की कथा सुनना मन को शांति, नैतिक और आध्यात्मिक सुख देती

है।

तुलसीदास की विशेषता यह थी कि उन्होंने साहित्य के माध्यम से समाज में नैतिक और आध्यात्मिक चेतना उत्पन्न की। उनका दृष्टिकोण दिखाता है कि साहित्य केवल कला और मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि समाज सुधार का शक्तिशाली माध्यम भी है।

तुलसीदास का व्यक्तित्व और आदर्श

तुलसीदास संत, कवि और समाज सुधारक थे। उनका जीवन आदर्श, संयमित और भक्ति प्रधान था। तुलसीदास ने भक्ति, धर्म और नैतिकता का समन्वय कर समाज और व्यक्ति दोनों के जीवन में सुधार लाने का कार्य किया।

'राम रतन धन पाय, सब सुख लहै।'

इसका अर्थ है कि रामभक्ति के माध्यम से व्यक्ति सभी सुख और आनंद प्राप्त करता है।

उनका व्यक्तित्व आज भी आदर्श के रूप में प्रस्तुत है, जो हमें नैतिकता, भक्ति और समाज सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। तुलसीदास का व्यक्तित्व यह दर्शाता है कि जीवन में उच्च आदर्श और मूल्य बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष और आधुनिक प्रासंगिकता

तुलसीदास की विचारभूमि आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। उनके संदेश – भक्ति, धर्म, नैतिकता, सामाजिक समानता और आदर्श शासन – आज भी मानव जीवन के मार्गदर्शन में उपयोगी हैं। तुलसीदास केवल कवि या संत नहीं थे, बल्कि समाज सुधारक, आध्यात्मिक गुरु और मानवता के मार्गदर्शक थे। उनकी रचनाएँ आज भी जीवन में उच्च आदर्श, भक्ति और नैतिकता का मार्गदर्शन करती हैं।

'भजु राम रतन धन पाय, मन दुख मिटि जाई।'

यह दोहा जीवन में भक्ति के महत्व और मानसिक शांति के मार्ग को दर्शाता है।

तुलसीदास का जीवन और साहित्य हमें यह सिखाता है कि भक्ति, ज्ञान, नैतिकता और समाज सेवा का समन्वय ही मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है।